

موضوع الخطبة : ستة عشر درسا من الهجرة النبوية

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي / حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : طارق بدر السنابلي (@Ghiras_4T)

शीर्षक:

नबवी प्रवासन से व्युत्पन्न १६ सीख एवं लाभ।

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُمْ مُسْلِمُونَ)

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا

كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا)

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ

يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا)

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है। दुष्टतम चीज धर्म में अविष्कारित बिदअत (नवाचार) है और प्रत्येक बिदअत गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह से डरो एवं उसका भय अपनी बुद्धि एवं हृदय में जीवित रखो। उसकी आज्ञा करो एवं अवज्ञा से वंचित रहा करो। ज्ञात रखो कि अल्लाह तआला ने अपने दूत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अवतार दूतों के चल बसने के एक लंबे समय के पश्चात किया जबकि इस धरती पर मूर्ति पूजा का चलन हो चुका था जिसमें इस धरती का सर्वश्रेष्ठ पाठ मक्का भी सम्मिलित था, इस कारणवश जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने परिवार के लोगों को इस्लाम की ओर आमंत्रित किया, उनमें से बहुत कम लोगों ने आपके आमंत्रण को स्वीकार किया, अधिकतम लोगों ने नकार दिया, चोरी छुपे यह प्रचार-प्रसार जारी था, कुरैश के काफ़िर इससे अनजान थे, परंतु जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम के प्रचार-प्रसार की सूचना दी, काफ़िरों के पूज्यों की कमी को बताया एवं स्पष्ट रूप से उनका खंडन किया, तो उनके हृदय में अपने पूज्यों की सुरक्षा हेतु पक्षपात (का दीप जल उठा।) एवं बहुदेववादियों के व्यवहार में अचानक परिवर्तन आ गया। इस कारणवश उन्होंने आपको (अपने प्रचार-प्रसार से हट जाने हेतु) धन-दौलत का झांसा दिया कि आप इससे सर्वश्रेष्ठ धनी हो जाएंगे, विवाह के नाम पर बहकाया कि आपका विवाह कुरैश की सबसे सुंदर महिला से हो जाएगा, आपको यह प्रस्ताव दिया कि वे आपको अपना शासक स्वीकार कर लेंगे, आपको यह भी अधिकार दिया कि आप उनके पूज्यों की एक वर्ष तक पूजा करेंगे एवं वे आपके पूज्य कि एक वर्ष तक पूजा करेंगे, परंतु आपने इन संपूर्ण प्रस्तावों को ठुकरा दिया।

(وَدُّوا لَوْ تَدَّهِنُ فَيَدِّهِنُونَ.) (لقمان:09)

अर्थात: "वे तो चाहते हैं कि आप ढीले पड़ जाएं तो वे भी ढीले पड़ जाएंगे।"

उन्होंने आपके ऐसे आज्ञाकारों को दुःख दिया एवं दंडित किया जो समाज में ना प्रभावशाली थे और ना ही उन्हें परिवार एवं जनजाति की सहायता प्राप्त थी। उन्हें बहुत ही दुखद यातना से दो-चार किया, ताकि वे बहुदेववाद की ओर पलट जाएं एवं इनके अतिरिक्त वो लोग जो अपने हृदय में इस्लाम के स्वीकार करने की इच्छा रखते हैं वे इन के प्रकोप से भयभीत हो जाएं। जब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि उनके सहाबा गंभीर परीक्षणों से पीड़ित हैं, एवं आप उनकी सहायता करने में भी असमर्थ हैं तो आपने उन्हें हबशा देश की ओर प्रवास करने की अनुमति दे दी। इस कारणवश सहाबा ने दो बार हबशा की ओर प्रवासन किया। प्रथम बार सन् पांच नबवी रहस्योद्घाटन (बेअसत-ए-नबवी) एवं द्वितीय बार सन् दस नबवी रहस्योद्घाटन (बेअसत-ए-नबवी) में, इसके पश्चात सहाबा ने मदीना की ओर प्रवास किया, फिर स्वयं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना की ओर प्रवास कर के सहाबा से भेंट किया ताकि इस्लाम के प्रचार-प्रसार का एवं अल्लाह की पूजा करने का लक्ष्य सफलतापूर्वक पूरा हो सके।

ए मुसलमानो! नबवी प्रवासन की घटना में बुद्धि लगाने वालों को उसके भीतर बहुत सी बुद्धिमत्ता दिखाई देती है एवं वे इससे अधिक से अधिक सीख एवं लाभ प्राप्त करते हैं, निम्नलिखित में उनमें से कुछ का उल्लेख किया जा रहा है:

(१) अल्लाह के मार्ग में धन, निवास एवं परिवार का बलिदान: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मक्का से निकलने लगे तो मक्का की ओर मुड़कर फ़रमाया: "अल्लाह की क़सम! निःसंदेह तू अल्लाह की धरती में सर्वश्रेष्ठ है एवं अल्लाह की पृथ्वी में सबसे अधिक प्रिय धरती है, यदि मुझे तुझसे ना निकाला जाता तो मैं ना निकलता।" (इसे तिरमिज़ी: ३९२५ ने रिवायत किया है एवं अल्बानी ने सहीह कहा है।)

(२) प्रवासन की घटना से एक सीख यह भी प्राप्त होती है कि जिस मनुष्य को इस्लाम का प्रचार-प्रसार करने से किसी स्थान पर रोक दिया जाए तो उसे द्वितीय स्थान की ओर प्रस्थान कर लेना चाहिए, जहां वह प्रचार-प्रसार का काम चालू रख सके। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब कु़रैश के निर्देश प्राप्त करने से निराश हो गए तो आपने मदीना की ओर प्रस्थान कर लिया ताकि वहां लोगों को अल्लाह की ओर आमंत्रण देने का कार्य चालू रख सकें।

(३) प्रवासन की घटना से एक सीख यह भी प्राप्त होती है कि कष्ट एवं परीक्षण का अल्लाह का जो सिद्धांत रहा है वह यहां अस्पष्ट है, क्योंकि स्वर्ग बहुमूल्य चीज़ है, जो शारीरिक विश्राम से प्राप्त नहीं हो सकती, बल्कि अल्लाह की आज्ञाकारीता हेतु परिश्रम करने एवं इस मार्ग में आने वाली कठिनाइयों पर धीरज रखने से प्राप्त होती है।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُدْخِلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمُ الصَّالِحِينَ. (آل عمران: 142)

अर्थात: "क्या तुम्हें यह भ्रम है कि तुम स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे हालांकि अल्लाह ने अभी तक यह स्पष्ट नहीं किया है कि कौन युद्ध लड़ने वाले हैं एवं कौन धीरज रखने वाले हैं?"

सर्वोच्च एवं सर्वश्रेष्ठ अल्लाह के लिए यह बहुत ही सरल बात थी कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हर प्रकार की कठिनाइयों एवं दुखों को दूर कर देते एवं क्षण भर में आपको मक्का से मदीना की ओर प्रस्थान कर देते, जैसा कि इसरा व मेअराज की रात्रि क्षण भर में "बुराक़" नामक सवारी के माध्यम से मक्का से बैतूल-मक़दिस प्रस्थान कराया, परंतु अल्लाह ने आपको परीक्षण से दो-चार करना चाहा ताकि आप अपने लोग एवं पश्चात में आने वाले लोगों हेतु प्रतिरूप बन सकें, धर्म का पालन एवं सत्यता की पहचान हो सके, अल्लाह के निकट आप का सवाब दोगुना हो जाए, एवं अल्लाह की ओर बुलाने वालों को आप से सीख मिल सके कि इस्लाम के प्रचार-प्रसार में जिन कठिनाइयों का सामना करना होता है उन पर धीरज रखना है।

(४) प्रवासन की घटना से हमें यह शिक्षा भी प्राप्त होती है कि संवेदी एवं शारीरिक साधनों को भी अपनाना चाहिए, इससे स्पष्ट होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रवास के लिए संवेदी तैयारी की। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब तक अल्लाह तआला ने आपको अनुमति नहीं दी तब तक आपने प्रवास नहीं किया, इसके अतिरिक्त आपने धरोहर रखने वाले यात्रा संगी का चयन किया, जो कि अबू बक्र रज़ि अल्लाहु अ़नहु हैं। अब्दुल्लाह बिन अबू बक्र रज़ि अल्लाहु अ़नहुमा की सहायता प्राप्त की

ताकि वह आपको कुरैश की सूचना पहुंचाया करें, अबू बक्र रज़ि अल्लाहू अनहु के नौकर आमिर बिन फुहैरा की भी सहायता प्राप्त की कि वह आप दोनों को दूग्ध पहुंचाया करें, वह अबू बक्र रज़ि अल्लाहू अनहु की बकरियां चराया करते थे, इसी प्रकार आपने पथों के दिशा-निर्देश प्राप्त करने हेतु अब्दुल्लाह बिन अरीक़त अल्-लैसी का सहयोग प्राप्त किया हालांकि वह बहुदेव वादी था परंतु वह धरोहर रखने वाला एवं पथों का महा ज्ञानी था। साधनों को अपनाने का एक उदाहरण यह भी है कि आपने ऐसे पथ का चयन किया जो अनजान था ताकि बहुदेव वादियों के आंखों में धूल झाँक सकें।

साधनों को अपनाने का एक उदाहरण यह भी है मक्का के दक्षिण में पस्थित सौर नामक गुफ़ा के भीतर आप तीन यात्रियों तक छुपे रहे इसके अतिरिक्त आप गुफ़ा से निकलकर मदीना की ओर उस वक्त तक कूच नहीं किए जब तक की बहुदेव वादियों ने आपका पीछा करना छोड़ ना दिया।

साधनों को अपनाने का एक उदाहरण यह भी है कि आपने अपने प्रवासन की बात को गुप्त रखा और केवल उन लोगों को इसकी सूचना दी जिन को बताना अति आवश्यक था। (ये वे लोग हैं जिन से आपने सहायता प्राप्त की) और उनका उल्लेख ऊपर हो चुका है।

ये वे १० बातें हैं जिनसे योजना के महत्व एवं साधनों को अपनाने संबंध में नबवी स्वभाव के प्रतिरूप की अस्पष्टता होती है।(८) प्रवासन की घटना से हमें यह भी ज्ञात होता है कि जो व्यक्ति अल्लाह के लिए किसी चीज़ को त्याग देता है तो अल्लाह तज़ाला उस से अच्छा पुरस्कार उसे प्रदान

करता है। इस कारणवश जब प्रवासियों ने अपना गृह, परिवार, संतान और धन एवं संपत्ति को (अल्लाह के लिए) त्याग दिया जो मानव की आत्मा हेतु सबसे अधिक प्रिय होते हैं तो अल्लाह ने उन्हें अच्छे परिणाम प्रदान किए वह इस प्रकार की संपूर्ण संसार में उन्हें सर्वश्रेष्ठ सफलता दी, पूर्व से लेकर पश्चिम तक का उन्हें स्वामी बना दिया, शाम, पारस, मिस्र उनके अधीन हो गए, मुसलमानों ने सहाबा के युग के पश्चात दक्षिण अफ्रीका की ओर प्रस्थान किया एवं उनदुलुस पर सफलता प्राप्त की।

(५) प्रवासन की घटना से हमें यह शिक्षा भी प्राप्त होती है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऊपर सूचीबद्ध संवेदी एवं शारीरिक साधनों पर ही निर्भर नहीं हुए, बल्कि आपके हृदय में केवल अल्लाह पर विश्वास था इसका साक्ष्य बहूदेव वादी जब गुफा के निकट पहुंचते तो अबू बक्र ने कहा: हे अल्लाह के दूत! यदि उनमें से किसी ने भी अपने पैरों की ओर दृष्टि की तो नीचे हमें देख लेंगा। तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम्हारा उन दो लोगों के संबंध में क्या विचार है जिनका तीसरा अल्लाह हो?" उन्हें कोई कष्ट नहीं हो सकता। (इसे बुखारी: ३६५३ एवं मुस्लिम: २३८१ ने रिवायत किया है एवं उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं)

अल्लाह तआला का सत्य कथन है:

"यदि तुमने उनकी सहायता नहीं की तो अल्लाह नहीं उनकी सहायता की उस समय जबकि उन्हें काफ़िरों ने निकाल दिया था, दो में से द्वितीय जबकि वे गुफा में थे जब वह अपने संगी से कह रहे थे: निराश ना हो अल्लाह हमारे साथ है। पालनहार ने अपनी ओर से शांति को अवतरित

करके ऐसी सेनाओं के माध्यम से उनकी सहायता की जिन्हें तुमने देखा ही नहीं। उसने काफ़िरों की बात को पराजित कर दिया, एवं सर्वोच्च व सर्वश्रेष्ठ बात तो अल्लाह ही की है जो शक्तिशाली एवं बुद्धिमत्ता वाला है।

प्रवासन के मार्ग में सुराका बिन मालिक अपने घोड़े पर सवार होकर आपका पीछा करता हुआ आप के निकट पहुंचा, अबू बक्र रज़ि अल्लाहू अन्हु ने कहा: हे अल्लाह के दूत: अंततः यह खोज हमें आ ही मिली, आपने फ़रमाया: "निराश ना हो अल्लाह हमारे साथ है।" (बुखारी: ३६५२)

(६) प्रवासन की घटना से हमें यह शिक्षा भी प्राप्त होती है इस्लाम के प्रचार-प्रसार के मार्ग में धीरज एवं दृढ़ता पर स्थित रहना अनिवार्य है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने प्रवासन के माध्यम से हमें यह शिक्षा दी की असत्य वादियों के समक्ष दृढ़ता के साथ स्थित रहना चाहिए चाहे वे क्रोधित ही क्यों ना हों। कभी-कभार मोमिनो के परिक्षण एवं काफ़िरों को उत्पीड़ित करने हेतु असत्य को जीत एवं उसके आज्ञाकारों को प्रभुत्व प्राप्त होता है। परंतु अंततः अच्छा परिणाम उनको ही प्राप्त होता है जो विश्वास एवं धीरज पर स्थित रहते हैं।

(وكان حقا علينا نصر المؤمنين)

अर्थात: "हम पर मोमिनो की सहायता करना अति आवश्यक है।"

(७) नबवी प्रवासन से हमें यह शिक्षा भी प्राप्त होती है कि इस बात का विश्वास होना चाहिए कि अच्छा परिणाम पवित्र लोगों के लिए ही है, जो व्यक्ति नबवी प्रवासन में बुद्धि लगाएगा स्पष्ट रूप से उन्हें यह ज्ञात होगा कि प्रचार-प्रसार का परिणाम कार्य गिरावट एवं क्षय से पीड़ित हो

जाएगा, क्योंकि असत्य वादियों की सामग्री शक्ति सत्य वादियों की विरुद्ध बहुत अधिक थी, परंतु सत्य यह है कि जिसके संग अल्लाह हो वास्तव में वही शक्तिशाली है। प्रवासन के ८ वर्षों के पश्चात मक्का जब इस्लामी शासन के भीतर प्रवेश कर गया, मक्का के वासी इस्लाम की वृत्ति में आ गए, एवं समय के व्यतीत होने के साथ संपूर्ण पृथ्वी पर अल्लाह का धर्म प्रसारित हो गया, प्रवासन की इस परिणाम में बुद्धि लगाने वाले को इस बात का विश्वास हो जाता है कि जिस चीज़ ने इस संपूर्ण दृष्टि को प्रेरित किया है वह सामग्री शक्ति ना थी बल्कि अल्लाह की शक्ति थी जिसने इन संपूर्ण महा कार्यों पर पूर्ण विराम लगाया।

निःसंदेह अल्लाह का धर्म प्रबल होकर रहता है क्योंकि धर्म की शक्ति वास्तव में अल्लाह की शक्ति होती है और अल्लाह को कोई भी पराजित नहीं कर सकता।

(إِنْ يَنْصُرْكُمْ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ وَإِنْ يَخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِي يَنْصُرُكُمْ مِنْ بَعْدِهِ)

अर्थात: "यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता कर दे तो कोई भी तुम पर प्रबल नहीं हो सकता एवं यदि अल्लाह तुम्हें अनदेखी कर दे तो कौन है जो उसके पश्चात तुम्हारी सहायता करे?"

(८) प्रवासन की घटना से हमें यह भी ज्ञात होता है कि जो व्यक्ति अल्लाह के लिए किसी चीज़ को त्याग देता है तो अल्लाह तआला उस से अच्छा पुरस्कार उसे प्रदान करता है। इस कारणवश जब प्रवासियों ने अपना गृह, परिवार, संतान और धन एवं संपत्ति को (अल्लाह के लिए) त्याग दिया जो मानव की आत्मा हेतु सबसे अधिक प्रिय होते हैं तो अल्लाह ने उन्हें अच्छे

परिणाम प्रदान किए वह इस प्रकार की संपूर्ण संसार में उन्हें सर्वश्रेष्ठ सफलता दी, पूर्व से लेकर पश्चिम तक का उन्हें स्वामी बना दिया, शाम, पारस, मिस्र उनके अधीन हो गए, मुसलमानों ने सहाबा के युग के पश्चात दक्षिण अफ्रीका की ओर प्रस्थान किया एवं उनदुलुस पर सफलता प्राप्त की।

(९) प्रवासन की घटना से हमें यह भी ज्ञात होता है कि जो व्यक्ति अल्लाह के आदेशों का पालन करता है एवं उसकी सुरक्षा करता है तो अल्लाह भी उसकी सुरक्षा करता है, उसके लिए (प्रत्येक कठिनाई से) निकास का मार्ग प्रकट कर देता है, इस कारणवश कुरैश के मुख्य व्यक्तियों ने जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कारावास करना एवं हत्या करना चाहा अथवा आपको निर्वासन करने का षड्यंत्र रचने लगा तो अल्लाह ने आपकी रक्षा की, उनके षड्यंत्र से अल्लाह ने उन्हें सुरक्षित रखा, एवं आपको सम्मान पूर्वक बिना किसी दुख एवं कठिनाई के मक्का से मदीना पहुंचाया।

(१०) प्रवासन की घटना से अबू बक्र रज़ि अल्लाहु अंहु की श्रेष्ठता भी स्पष्ट होती है वह इस प्रकार की नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रवासन के समय अपना संगी हेतु आपका चयन किया एवं उनको इस का अधिकार भी प्राप्त था क्योंकि आप से उन्होंने संगत की मांग की थी एवं वह आप की संगत से इतना प्रसन्न हुए कि नयन से अश्रु निकल पड़े। उन्होंने आपके लिए सवारी की व्यवस्था की, मार्ग में जब आपको याद आता कि शत्रु घात में है तो (आप की सुरक्षा हेतु) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आगे चलने लगते एवं जब याद आता कि आपका शत्रु आपके पीछे है

तो (आप की सुरक्षा हेतु) आप के पीछे हो लेते, उन्होंने संपूर्ण परिवार को अल्लाह के मार्ग में लगा दिया, इस कारणवश उन्होंने अपने बेटे अब्दुल्लाह को सूचना पहुंचाने हेतु जिम्मेवारी सौंपी, अपने नौकर आमिर बिन फुहैरा को इस कार्य पर स्थित किया कि वह अबू बक्र की बकरियां लेकर प्रातः के समय निकले एवं दिन भर उन्हें चराए एवं सांय के समय बकरियां लेकर उनके समक्ष पहुंचे ताकि आप एवं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन बकरियों का दुग्ध पी सकें, जब अब्दुल्लाह बिन अबू बक्र प्रातः के समय उन दोनों के पास से निकलते तो आमिर बिन फुहैरा उनके पैरों के चिन्हों पर चलते हुए निकलते ताकि उनके पैरों के चिन्हों को मिटाते हुए जाएं ताकि शत्रु को आप के निकट पहुंचने का कोई चिन्ह ना मिल सके। सारांश यह है कि अबू बक्र रज़ि अल्लाहू अ़नहु ने अपने आपको, अपने संपूर्ण परिवार को और अपने धन एवं संपत्ति को इस्लाम की सफलता व उर्जा हेतु त्याग दिया था।

(११) नबवी प्रवासन से हमें महिलाओं के सर्वोच्च कार्यों का भी ज्ञात होता है, यह उस महाकर्म से स्पष्ट होता है जिसको आस्मा बिते अबू बक्र रज़ि अल्लाहू अ़नहा ने किया था, वह इस प्रकार की उन्होंने अपने पेटिकोट के दो पाठ कर दिए एक पाठ से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एवं अबू बक्र रज़ि अल्लाहू अ़नहु हेतु मार्गव्यय को ऊंटनी पर बांधा, एवं द्वितीय पाठ से आपके चमड़े के बोटल (मशकीज़ा) को बांधा इस कारणवश आपको "जातुन्निताकैन" की उपाधि प्राप्त हुई। (सहीह बुखारी:३९०५)

उनकी एक घटना यह भी है कि उनके पिता अबू बक्र रज़ि अल्लाहू अनहु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मदीने की ओर जा निकले तो उन्होंने अपने संग सारा धन ले लिया जिसकी मात्रा उस समय पांच अथवा छः दिरहम थी, वो कहती हैं: उनके पिता सारा धन लेकर चल दिए, उनका कहना है कि हमारे पास हमारे दादा अबू कुह्राफ़ा का आगमन हुआ, जिन की दृष्टि जा चुकी थी, उन्होंने कहा: अल्लाह की क़सम! वह स्वयं तो गया ही, साथी वह सारा धन भी तुम्हारे पास से लेकर चला गया, वह कहती हैं: मैंने कहा, बिल्कुल नहीं दादा जान! उन्होंने हमारे पास बहुत से लाभ एवं भलाइयां (खैरात व बरकात) छोड़े हैं, वह कहती हैं: मैंने पत्थर के कुछ टुकड़े लिए, और उसे उस ताक़ में रखा जिसमें मेरे पिता अपना धन रखते थे एवं उस ताक़ पर एक वस्त्र लटका दिया फिर दादा जान का हाथ पकड़कर मैंने कहा: दादा! अपना हाथ इस धन पर रखिए, उनका कहना है; उन्होंने अपना हाथ उस स्थान पर रखा और कहा: कोई बात नहीं, अगर उन्होंने तुम्हारे हेतु इतना धन छोड़ा है तो बहुत अच्छा किया है। यह तुम्हारे जीवन की आवश्यकताएं हेतु पर्याप्त होगा। उनका कहना है: अल्लाह की क़सम उन्होंने हमारे लिए कुछ नहीं छोड़ा, परंतु मैंने इस बहाने के माध्यम से अपने वृद्ध दादा को संतुष्ट करना चाहती थी। (अहमद ६/३५० ने रिवायत किया है, एवं अल्-मुस्नद: २६९७५ के शोधकर्ताओं ने इसे हसन कहा है।)

(१२) नबवी प्रवासन से मदीने के वासी औस-व-खज़रज के मनुष्यों की श्रेष्ठता भी स्पष्ट होती है, क्योंकि मदीना को इस्लाम से पूर्व अन्य प्रदेशों पर कोई श्रेष्ठा प्राप्त नहीं थी, परंतु जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

मदीने की ओर प्रवास किया और मदीना के वासियों ने आपकी हर संभव सहायता की एवं सहयोग दिया। तो मदीने को (अन्य प्रदेशों पर) एक प्रकार की श्रेष्ठता प्राप्त हुई एवं इससे मदीने की विशेषताएं भी स्पष्ट हो गईं।

(१३) नबवी प्रवासन से उन संपूर्ण नास्तिकों की नकारात्मकता सिद्ध होती है जो यह दावा करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हवस, धन संपत्ति एवं शासन वह शक्ति की इच्छा रखते थे, क्योंकि आपको धन-संपत्ति, राजनीतिक एवं आर्थिक पदें दी गईं परंतु आपने सभी को ठुकरा दिया, यदि आपको इन चीजों की इच्छा होती तो आप इस उपहार को अवश्य स्वीकार कर लेते एवं अपने स्थान पर राजा बने रहते, मक्का से मदीना की ओर प्रवासन की कठिनाईयां ना झेलते, अपनी आत्मा को संकट में ना डालते, गृह, देश, वतन, परिवार एवं संतान को ना त्यागते, परंतु (सत्य है कि) आपको केवल एवं केवल तौहीद की, एवं लोगों को (कुफ़्र के) अंधकार से निकालकर (इस्लाम के) प्रकाश की ओर लाने की चिंता सता रही थी।

(१४) प्रवासन से एक सर्वश्रेष्ठ शिक्षा यह भी प्राप्त होती है काफ़िर देश से मुस्लिम देश की ओर प्रवासन करना वैध है। जहां मुसलमान अपने धार्मिक रीति रिवाज पर चल सकें, जिस व्यक्ति के लिए किसी स्थान पर अपने धार्मिक परंपराओं को अपनाना असंभव लगे उस के लिए धार्मिक स्तर पर यह अनिवार्य है ऐसे स्थान की ओर प्रवास करे जहां धर्म का पालन करना सरल हो, अन्यथा वह प्रवासन के छोड़ने पर दोषी होगा।

(१५) नबवी प्रवासन से यह शिक्षा भी प्राप्त हुई कि इसमें ऐसे प्रतीक प्रकट हुए हैं जो आपके दूत होने के साक्ष्य हैं, उदाहरण स्वरूप: जब सुराका बिन

मालिक ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पकड़ना चाहा ताकि वह उस पुरस्कार को प्राप्त कर सके जो कुरैश ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उपस्थित करने हेतु स्थित किया था, जब उनकी दृष्टि आप पर पड़ी तो उनके घोड़े के पैर धरती में भूगस्त होने लगे, फिर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको यह शुभ संदेश दिया कि उनको किसरा के कंगन हाथ लगेंगे। आपने फ़रमाया: (मानो मैं देख रहा हूँ कि तुम किसरा का कंगन पहन रहे हो।) (दलाएलुन्-नुबूव्वा: ६/३२५, प्रकाशक: दारुल्- कुतुब- अल्-इल्मिया) ऐसी घटना उमर रज़ि अल्लाहू अ़नहु के शासनकाल में घटी।

(१६) प्रवासन से हमें यह सीख भी प्राप्त होती है कि अल्लाह की और आमंत्रण देने हेतु प्रत्येक अवसर पर लाभार्थी होना चाहिए। प्रवासन के मार्ग में "कुराज़ल्-ग़मीम" (कुराज़ का अर्थ: किनारा है और ग़मीम: असफ़ान के समक्ष एक घाटी का नाम है।) नामक घाटी के निकट रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुजर बुरैदा बिन अल्-हसीब आल्-असलमी के पास से हुआ, वह अपने परिवार के ८० लोगों के संग थे, आपने उन्हें इस्लाम की ओर आमंत्रित किया और और संपूर्ण लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया, उनके संग आपने ईशा की नमाज़ पढ़ी, और उस रात्रि सुरह-ए-मरयम के प्रारंभिक श्लोकों की शिक्षा दी। ("अल्-बिदाया वन्-निहाया" अहदासुस्-सुन्ना: ७२' ११/६११, प्रकाशक: दारु हिज़्र)

मेरे भाइयो! नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने ऐसा इस भय की स्थिति में किया कि कहीं बहुदेव वादी आप को पकड़ ना लें, परंतु आपके भीतर सत्य के प्रचार-प्रसार का भाव, अल्लाह पर सत्य विश्वास की लहर इस प्रकार थी कि आपने प्रचार-प्रसार को अपने प्राण से भी अधिक महत्व दिया। सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम! ये नबवी प्रवासन से व्युत्पन्न १६ सीख एवं लाभ हैं, नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम एवं अन्य दूतों के चरित्र में इनके अतिरिक्त भी अनेक शिक्षा एवं लाभ प्रकट हुए हैं, अल्लाह हमें उनसे लाभार्थी होने एवं उनको अपने जीवन में लागू करने की शक्ति प्रदान करे, अल्लाह तआला हमें एवं आपको सर्वश्रेष्ठ कुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आपको कुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता हूं, आप भी उस से क्षमा प्रार्थी हों। निःसंदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله و الصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد!

प्रशंसाओं के पश्चात!

आप ज्ञात रखें -अल्लाह आप पर कृपा करे- प्रवासन की घटना का सम्मान यह नहीं है कि समारोहों का आयोजन किया जाए, भले ही उनके भीतर प्रवासन से व्युत्पन्न लाभों का ही उल्लेख हो, बल्कि विशेष रूप से नबवी प्रवासन एवं सार्वजनिक रूप से नबी के चरित्र का सत्य सम्मान यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञाकारीता की जाए, आपके चरित्र एवं प्रवासन की घटना में जो नवोन्मेष एवं विचलन आ गये हैं, उन से वंचित रहा जाए।

● इसके अतिरिक्त आप यह भी ज्ञात रखें कि -अल्लाह आप पर कृपा करे- कि अल्लाह ने आपको एक बहुत बड़े कार्य का आदेश दिया है। अल्लाह का कथन है:

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا .

अर्थात: "अल्लाह तआला एवं उसके देवदूत अपने दूत पर रहमत भेजते हैं, ए मोमिनो! तुम भी उन पर दरूद भेजो और खूब सलाम भेजते रहा करो।"

● हे अल्लाह! तू अपने दास एवं दूत पर अपनी रहमत एवं सलामती अवतरित कर, उनके पश्चात आने वाले शासकों, महान आज्ञाकारों एवं प्रलय के दिन तक शुद्धता के साथ उनकी आज्ञाकारीता करने वालों से प्रसन्न हो जा।

● हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं श्रेष्ठता प्रदान कर, बहुदेव वाद एवं बहुदेव वादियों को अपमानित कर दे एवं अपने धर्म की रक्षा कर।

● हे अल्लाह! हमें अपने देशों में अमन और शांति वाला जीवन प्रदान कर, हे अल्लाह! हमारे इमामों एवं शासकों को सुधार दे।

● हे अल्लाह! संपूर्ण मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म को सर्वोच्च रखने की शक्ति प्रदान कर।

● हे अल्लाह! हम तेरा शरण चाहते हैं तेरे प्रदान किए गए वरदानों के नष्ट होने से, तेरी स्वास्थ्य के हट जाने से, तेरी अचानक आने वाली यातना से एवं तेरे हर प्रकार के क्रोध

से।

● हे अल्लाह! हम फुलबहरी (बर्स), पागलपन, कोढ़ एवं संपूर्ण प्रकार के रोगों से तेरा शरण चाहते हैं।

● हे हमारे पालनहार! हमें संसार में पूण्य दे, प्रलय के दिन भी भलाई प्रदान कर एवं नरक की यातना से वंचित रख।

● ए अल्लाह के दासो! निःसंदेह अल्लाह तआला न्याय करने का, भलाई करने का, परिवार के लोगों के संग शुभ व्यवहार करने का आदेश देता है, असभ्यता के कार्यों से, अशिष्ट व्यवहार करने से एवं अत्याचार करने से रोकता है, एवं स्वयं तुम्हें यह सलाह देता है कि तुम सलाह को अपनाओ। इस कारणवश तुम सर्वश्रेष्ठ अल्लाह को याद करो, वह तुम्हें याद करेगा। उसके वरदानों पर उसके आभारी बनो, वह तुम्हें अधिक वरदान प्रदान करेगा। अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है, तुम जो कुछ भी करो वह उससे अवगत है।

लेखक:

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

१६ मुहर्रम १४४२

जूबैल, सऊदी अरब

०९६६५०५९०६७६

अनुवाद:

तारिक बदर सनाबिली

binhifzurrahman@gmail.com